Reduction of Prejudice 14.01.20

(पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा या पक्षपात को दूर करने के उपाय) :

पक्षपात हमारे व्यवहार को बहुत प्रभावित करता है इसका प्रभाव सामाजिक जीवन पर पड़ता है। इसके कारण केवल व्यक्तिगत सम्बन्ध ही नष्ट नहीं होते, बल्कि यह सामाजिक विघटन का कारण भी बन जाता है।

पक्षपात के आधार पर सम्पूर्ण समाज परस्पर विरोधी भाव वाले खण्डों में विभाजित हो जाता है। इसके फलस्वरूप सामाजिक एकता व संगठन पनप नहीं पाते और मित्रतापूर्ण सामाजिक सम्बन्धों के ~~[illegible]~~ स्थान पर कटु सामाजिक सम्बन्ध पनपने लगते हैं।

इसके कारण देश के उद्योग ~~[illegible]~~ धन्धों के विकास या आर्थिक उन्नति के पथ में अनेक बाधायें उत्पन्न हो सकती हैं। पक्षपात के कारण ही श्रमिक और पूँजीपति वर्ग एक दूसरे से दूर हो जाते हैं।

पक्षपात प्रजातंत्र के विकास में भी बाधक है। इसका स्वाभाविक प्रभाव राष्ट्रीय प्रगति पर भी पड़ता है।

पक्षपात को दूर करने के उपाय :-

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक या राष्ट्रीय प्रगति अथवा जन-कल्याण के लिए पक्षपात को दूर करना आवश्यक है। शिक्षा का प्रसार कर लोगों के हृदय से संकीर्ण मनोभावों व अन्धविश्वासों को दूर किया जा सकता है। धार्मिक रूढ़िवादिताओं तथा प्रजातीय-जातीय श्रेष्ठता के भ्रम से छुटकारा दिलाकर पक्षपात कम किये जा सकते हैं।

चूँकि पक्षपात के कई कारण हो सकते हैं, अतः इसके उपचार की भी कई विधियाँ हैं। उपचार विधि का सीधा सम्बन्ध पूर्वधारणा के कारणों से होता है। चूँकि पक्षपात के भिन्न-भिन्न कारण एक-दूसरे पर अवलम्बित हैं, इसलिए भिन्न-भिन्न उपचार विधियों का समकालिक उपयोग आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित विधियों द्वारा पक्षपात को दूर किया जा सकता है—

1. विधान या कानून के माध्यम से पक्षपात को दूर किया जा सकता है। यह विधि ऐसे समाज या राष्ट्र में अधिक सफल प्रमाणित होती है, जहाँ के लोग विधि पालन करते हैं।

2. किसी भी समूह या सम्प्रदाय की कुछ प्रथायें तथा लोकरीतियाँ ऐसी हैं जिनका आधार कानून नहीं है बल्कि परम्परा है। अनौपचारिक अभियान द्वारा इनमें परिवर्तन लाकर मानव-जातीय

Scanned with CamScanner

पूर्वधारणाओं को दूर किया जा सकता है तथा इसके उद्‌भव को रोका जा सकता है। भारतीय संस्कृति में राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के पक्ष में हिन्दुओं की कठोर मनोवृत्ति को बदलने का सफल अभियान चलाया था। महात्मा गांधी तथा डॉ० अम्बेडकर ने अछूतों के प्रति बढ़ती हुई नकारात्मक मनोवृत्ति तथा वैरभाव रोकने का अभियान चलाया। जिसमें उन्हें कुछ सफलता भी मिली।

3. पक्षपात या पूर्वधारणा को दूर करने तथा अन्तर्समूह संघर्ष को कम करने के लिए अनौपचारिक तथा औपचारिक शिक्षा का होना आवश्यक है। अनौपचारिक शिक्षा का सम्बन्ध परिवार, समाज तथा समुदाय के सदस्यों से है। माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों को चाहिए कि वे अपने व्यवहार तथा वाणी से बच्चों में मानव जातीय समूहों के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति तथा सद्‌भाव विकसित करने का प्रयास करें। इसी प्रकार समाज तथा समुदाय के सदस्य भी अनौपचारिक शिक्षा में सहायक हो सकते हैं।

4. पूर्वधारणा तथा विभेदीकरण को कम करने या दूर करने का एक व्यावहारिक उपाय अन्तर्विवाह है। अन्तर्जातीय विवाह से जातिगत पूर्वधारणा घट सकती है। इसी प्रकार अन्तर-धर्म विवाह (Inter-religion marriage) से धार्मिक

Scanned with CamScanner

से धार्मिक पूर्वधारणा दूर हो सकती है।

5. भिन्न-भिन्न समूहों के बीच अलगाव की नीति के कारण पूर्वधारणा के विकास तथा सुधार को चाहिए कि समूह की अलगाववादी नीति का विरोध करें तथा समूह समाकलन-नीति पर अमल करें। पृथक गृह-परियोजना के बदले समाकलित गृह-परियोजना की व्यवस्था करने से अन्तर्समूह मनोवृत्ति अनुकूल बनती है।

6. पक्षपात को कम या दूर करने का दायित्व न केवल सरकार पर बल्कि सामान्य नागरिकों पर भी है। अतः नागरिकों को चाहिए कि ऐसे संगठनों का निर्माण करें जिसमें सभी जातियों, वर्गों तथा सम्प्रदायों के लोग शामिल हों। इस संगठन को चाहिए कि पूर्वधारणाओं को दूर करने के विविध उपायों पर अमल करें तथा सरकार द्वारा उठाये गये अनुकूल कदमों को सफल बनायें।

7. पक्षपात को दूर करने के लिए समाज में समानता और उदारता का भाव जागृत करना आवश्यक है। इसके लिए जाति और वर्ग के भेद को समाज से दूर करना होगा। इससे सब लोग अपने को बराबर समझेंगे और कोई किसी के विरुद्ध हीन-भावना अपने मन में नहीं लायेगा। इस तरह पूर्वाग्रह के विकास का अवसर ही नहीं मिलेगा।

8. भारत में जाति-भेद के कारण हिन्दुओं में अनेक प्रकार के पक्षपात पाये जाते हैं। इसे दूर करने के लिए जाति-उद्‌गम के इतिहास को समझना होगा। इस इतिहास से स्पष्ट होता है कि जाति-व्यवस्था का प्रारम्भ श्रम-विभाजन से हुआ तथा श्रम-विभाजन ने ही जाति-व्यवस्था का रूप पकड़ लिया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जाति प्रकृति-प्रदत्त नहीं है। अतः जाति-व्यवस्था का वैज्ञानिक अध्ययन यह सिद्ध करेगा कि इसके मूल में कोई सत्य नहीं है। इसी तरह किसी भी पूर्वाग्रह का वैज्ञानिक अध्ययन कर उसे निर्मूल सिद्ध किया जा सकता है।

9. पूर्वाग्रह पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए सम्बन्धित वर्गों में परस्पर विचार का आदान-प्रदान होना चाहिए जिससे एक में दूसरे के प्रति सहानुभूति और उदारता का विकास हो। इस विकास के आधार पर लोग एक-दूसरे के वास्तविक गुणों को समझने लगेंगे और उनमें पक्षपात नहीं बैठ पायेगा।

10. पूर्वाग्रह की नींव ही न पड़े इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही बालकों को अन्तर्राष्ट्रीय, विश्वबोध, विश्वबन्धुत्व तथा सहिष्णुता की शिक्षा दी जाय।

(signature) 14/05/20

Dr. S.K. Suman, Asst. Prof.
Dept. of Psychology
Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner